IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.67
Volume 5, Issue 3, January 2025

# कामकाजी महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति एक अध्ययन

डॉ. शाहेदा सिद्दिकी
प्राध्यापक
समाजशास्त्र विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा (म.प्र.)

आशरीन बानो
शोधार्थी
समाजशास्त्र विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा (म.प्र.)

**सारांश**

कामकाजी महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है। वर्तमान महिला घरेलू छवि को तोड़कर कामकाजी महिला के रूप में पुरूषों के समकक्ष प्रतिस्थापित हो रही है। विभिन्न योजनाओं के तहत किये गये सरकारी प्रयासों ने उसकी सशक्तता में सहायता दी है। प्रस्तुत शोधकार्य का उद्देश्य विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के तहत किये गये सरकारी प्रावधानों का अध्ययन करना तथा कामकाजी महिलाआ की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करना है। इसके लिए विभिन्न द्वितीयक स्रोतों द्वारा सामग्री का संकलन कर उनका विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि स्वतंत्रता के पश्चात् किये गये विविध सरकारी प्रयासों के फलस्वरूप महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है। परिवार की सामाजिक व आर्थिक सशक्तता का माध्यम बनकर वे स्वयं भी व्यक्तिगत रूप से सशक्त हुई हैं। परम्परा से आधुनिकता की ओर संक्रमण के इस दौर मे ं आपसी तालमेल के कुछ मानक पुरूष व महिला को मिलकर निर्धारित करने होंगे, तभी महिलाओं की आर्थिक व सामाजिक सशक्तता सार्थक होगी।

**प्रस्तावना –**

विकास की प्रक्रिया में निःसंदेह महिलाओं के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। विश्व में आज बढ़ते विकास की प्रक्रिया को सतत् विकास के नाम से जाना जाता है। भारत में महिलाओं की स्थिति से संबंधी समिति का मानना है कि समाज के विकास में महिलाओं की भागीदारी तय करते समय व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता, परिवार में स्थिति, सामुदायिक भागीदारी और वैश्विक समाज में महिला और पुरूष दोनों को समान रूप से देखे जाने की आवश्यकता है। वर्ष 1975 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के रूप मे ं घोषित किया गया जिसका उद्देश्य विकास में महिला विकास को बढ़ावा देना और महिलाओं को अपने अधिकार के प्रति जागरूक करना था। भूमिका को महत्वपूर्ण मानने वाले विद्वानों का विचार है कि एक व्यक्ति समाज मे ं जो भूमिका निभाता है उससे उसका दृष्टिकोण प्रभावित होता है। मध्यम वर्ग की स्त्रियां आज जो षिक्षित और नौकरी करने वाली स्त्रियों की भूमिका निभा रही है ं उससे उन्हें एक नया सामाजिक तथा आर्थिक दर्जा प्राप्त हुआ है तथा जीवन के विभिन्न पहलुओं के प्रति उनका दृष्टिकोण भी प्रभावित हुआ है। विभिन्न सामाजिक–आर्थिक तथा राजनीतिक कानूनी अधिकारों के मिलने से–भले ही सैद्धान्तिक रूप मे ं ही सही–षहर की षिक्षित स्त्रियों का स्त्री तथा पत्नी के रूप में अपनी भूमिका तथा स्थान एवं पुरूष तथा पति के रूप मे ं पति के उत्तरदायित्व एवं स्थान की ओर दृष्टिकोण बदलता जा रहा है। दूसरे समाजषास्त्रियों के अध्ययनों से भी पता चलता है कि नौकरी करने वाली षिक्षित स्त्रियों का दृष्टिकोण, विषेषकर विवाह और परिवार के भीतर तथा बाहर के अपने अधिकारों और विषेषाधिकारों की ओर बहुत कुछ बदल चुका है। लेकिन क्या स्त्री के उत्तरदायित्व और दर्जे की ओर पुरूष वर्ग और समाज का भी दृष्टिकोण बदला है? क्या इस देष के संविधान और विभिन्न काननूी और राजनैतिक अधिकारों ने सिद्धान्त रूप मे ं स्त्रियों को जो सामाजिक दर्जा दिया है वह स्त्रियों को प्राप्य हो सका है? स्त्री के दृष्टिकोण मे जो परिवर्तन

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.67
Volume 5, Issue 3, January 2025

आये है ं क्या उसकी वजह से पुरूषों के साथ के उसके अन्तर्वयक्तिक सम्बन्धो मे ं कटुता आई है? यदि ऐसा है तो परिवार के भीतर या बाहर उठने वाले संघर्षो एवं तनाव के क्या कारण है ं? किसी भी समाज की तस्वीर बदलने मे ं महिलाओं का योगदान महत्त्वपूर्ण होता है। नेपोलियन बोनापार्ट ने कहा था कि मुझे योग्य माता दे दो मैं तुमको योग्य राष्ट्र दूँगा। आज हर क्षेत्र मे ं महिलाएँ पुरूषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य कर रही हैं। महिला सशक्तीकरण के दौर मे ं महिलाओं ने घर की देहड़ी से बाहर कदम बढ़कर स्वयं कामकाजी महिला होने का गौरव हासिल किया है तथा स्वयं की व समाज की स्थिति को परिवर्तित करने का बीड़ा उठाया हैं।

पुरातन समाज में किसी की माँ अथवा बहू या पत्नी के रूप मे ं पहचानी जाने वाली महिला ने अपनी परम्परागत छवि को तोड़ा है। आज उसकी स्वयं की अपनी पहचान है। उसने पुरुषों के समकक्ष स्तर, अवसर तथा सामाजिक, आर्थिक व कानूनी अधिकार प्राप्त कर लिए है ं। एक कामकाजी महिला की स्थिति का ऑकलन करना एक कठिन कार्य है। यूँ तो प्रत्येक महिला कामकाजी होती है। परन्तु घरेलू महिला के कामकाज का आर्थिक मूल्य न होने के कारण उसे कामकाजी की श्रेणी मे ं नहीं रखा जाता। पर्वतीय क्षेत्रों के संदर्भ मे ं यदि देखा जाय तो यहाँ महिला ही घरेलू जीवन की धुरी होती है और कामकाज के बोझ के तले दबी रहती है, परन्तु उसके कार्य का आर्थिक रूप से कोई मूल्यांकन न होने के कारण उसे कोई महत्त्व नहीं दिया जाता। यूँ तो सामान्य रूप से एक महिला का जीवन सदैव ही परिवार को समर्पित रहा है, परन्तु आज महिला परिवार से इतर स्वयं के लिए भी सोचने लगी है, परन्तु क्या उसकी इस स्थिति को समाज ने स्वीकृत किया है? इस शोध पत्र के माध्यम से यही जानने का प्रयास किया गया है।

**शोध का उद्देश्य–**

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये है –

1. महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के संदर्भ में किये गये सरकारी प्रयासों का अध्ययन करना।
2. कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण करना।
3. कामकाजी महिलाओं की आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करना।

कामकाजी महिला का तात्पर्य ऐसी महिला से है जिसे किसी भी प्रकार के शारीरिक अथवा मानसिक कार्य के बदले आर्थिक मूल्य प्राप्त होता है। सामाजिक स्थिति का तात्पर्य महिला को उसके कार्यों के आधार पर समाज में प्राप्त प्रतिष्ठा से है। इसी प्रकार एक आर्थिक ईकाई के रूप में महिला के कार्यों का ऑ ंकलन तथा स्वयं व परिवार के विकास मे ं उसकी भूमिका को आर्थिक स्थिति के रूप मे ं लिया गया है।

**कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्थिति –**

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि महिलाओं की स्थिति देखकर ही किसी राष्ट्र की उन्नति का पता लगाया जा सकता है। भारतीय संदर्भ में आज महिलाएँ संक्रमण के दौर से गुजर रही हैं। वे घरेलू से कामकाजी स्तर की ओर कदम बढा रही हैं। एक तरफ वे अपने परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हुई हैं, वहीं दूसरी ओर कार्यस्थल पर भी अपनी प्रतिष्ठा को स्थापित कर रही है कामकाजी महिलाओं का शिक्षा स्तर अच्छा होने के कारण उनके पास जानकारियाँ अधिक होती हैं तथा उनका मानसिक स्तर सशक्त होता है। कार्यक्षेत्र मे ं नित्य नये अनुभव, नयी समस्याएँ उसके मानसिक स्तर को विकसित करते हैं, जिससे उसके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। अपने कार्यक्षेत्र से प्राप्त अनुभव के आधार पर वे प्राप्त ज्ञान का

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.67
Volume 5, Issue 3, January 2025

उपयोग अन्य क्षेत्रों मे ं करने मे ं सक्षम होती हैं। गोला (2016) के अनुसार, ''पिछले पाँच दशकों में महानगरीय क्षेत्र में रहने वाली महिलाओं की जिम्मेदारियों में 35 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है। महिला सशक्तीकरण के इस युग मे ं कामकाजी महिला को सामाजिक रूप से अधिक सम्मान प्राप्त होता है। सामाजिक उत्सवों में उसे अन्य महिलाओं से उच्चतर आँका जाता है। समाज को कुछ देने का सुअवसर तथा स्वयं अपनी सुदृढ़ पहचान बनाने का सुअवसर उसे प्राप्त होता है। आत्मविश्वास और आत्मसम्मान सिखाया नहीं जा सकता। परिस्थितियों के अनुरुप ये प्रवृत्तियाँ स्वयं विकसित होती हैं'' (स्ट्रोमक्विस्ट, 2005)। सशक्तिकरण का तात्पर्य महिला को इतना कुशल बनाना होता है कि वह अपने आस–पास सामाजिक, आर्थिक वातावरण का लाभ उठा सके व अपनी भावनाओं व इच्छाओं को दृढ़ता के साथ अभिव्यक्ति कर सके। इस दृष्टिकोण से एक कामकाजी महिला एक सशक्त महिला की श्रेणी में आती है। महानगरीय संस्कृति में परिवार में सांस्कृतिक मूल्यों के सृजन के संदर्भ में उसकी भूमिका और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि वहां पारिवारिक वातावरण के रूप में संयुक्त परिवार के अन्य सदस्य या आस–पड़ोस का योगदान नगण्य होता है। विपरीत इसके पढ़ी–लिखी होने के बावजूद भी महिलाएँ घरेलू वातावरण में अन्ध विश्वास व दकियानूसी विचारधाराओं का शिकार हो जाती हैं, क्योंकि वातावरण एक सशक्त कारक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करता है। घरेलू महिलाएँ आमतौर पर जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में निर्णय लेने के संदर्भ में पुरुषों पर ही आश्रित रहती हैं, जबकि पेज (1990) के अनुसार, ''अपने जीवन को स्वयं निर्देशित व नियंत्रित करने की क्षमता ही सशक्तिकरण कहलाती है। घर से बाहर स्वयं निर्णय लेने के कारण कामकाजी महिलाएँ सशक्तता के इस स्तर को प्राप्त कर लेती हैं।''

कामकाजी महिलाओं की आर्थिक स्थिति बढ़ाने आर्थिक रूप से भी कामकाजी महिलाएँ सशक्त होती है ं, इसी कारण अपनी आवश्यकताओं को महत्त्व दे पाती है ं तथा परिवार को भौतिक सुख–सुविधाएँ प्रदान करते हुए सामाजिक व आर्थिक स्तर को मे ं सहायक होती हैं। गोला (2016) के अनुसार, ''महिलाएँ विशेषकर महानगरों मे ं अपने घर परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी उठाती है ं तथा सशक्तिकरण की पहचान के रूप में विद्यमान महिलाएँ अपने घरेलू कामकाज हेतु किसी एक व्यक्ति को रोजगार भी दे पाती है।'' स्ट्रोमक्विस्ट (2005) के अनुसार, ''आर्थिक सशक्तिकरण का तात्पर्य है कि स्त्री किसी उत्पादन कार्य द्वारा स्वायत्तता प्राप्त कर पाये। वर्तमान समाज में पहचान स्थापित करने हेतु आज 'फेमिली स्टेट्स' ही सबसे महत्त्वपूर्ण बन गया है।'' अतः इस स्टेट्स की प्राप्ति हेतु महिलाएँ सामाजिक व आर्थिक सशक्तता के हर पैमाने पर स्वयं को मजबूती से खडा रखना चाहती है। इस तरह वे व्यक्तिगत सशक्तता की ओर कदम बढ़ा रही हैं। आर्थिक स्थिति के आँकलन हेतु उनकी व्यक्तिगत स्थिति के संदर्भ में यदि देखा जाय तो वह आर्थिक रूप से सशक्त होती है ं। इस सशक्तता के बल पर वे स्वयं के तथा अपने बच्चों के हित के संदर्भ में निर्णय लेने लगी हैं। आर्थिक अशक्तता के कारण प्राचीन समय में सदैव पुरूष (मशः पिता, पति, पुत्र) के अधीन रहने वाली महिला कामकाजी होने के कारण स्वनिर्द`शित होने की स्थिति को प्राप्त कर चुकी है। आर्थिक सशक्तता के बल पर वह घरेलू समस्याओं के समाधान का हर सम्भव प्रयास करती है, तथापि पैसा हर समस्या का समाधान तुरन्त नहीं करता। यदि घरेलू नौकर काम छोड़कर चला जाय तो उसका प्रतिस्थानी तुरन्त मिलना बड़ा कठिन है। महानगरीय क्षेत्रो मे ं जहां महिलाएं निजी क्षेत्रों में कार्यरत है। घर से कार्यस्थल तक पहु ंचने मे ं लगने वाला समय तथा कार्य समय को देखा जाय, तो महिला 12 घंटे घर से बाहर बिताती है। केवल चार घंटे का समय ही उसके पास पारिवारिक संबंधों के निर्वहन के लिए बचता है, परन्तु परिवार, समाज व कार्य स्थल के उत्तरदायित्वों के बीच समायोजन की कोशिश मे ं ये सदैव लगी रहती है ं। समायोजन की इस प्रक्रिया में यद्यपि तनावग्रस्तता की स्थितियँ भी आती है ं, परन्तु इनकी सशक्तता इन परिस्थितियों से उबरने मे ं सहायक होती है, परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों मे ं 90 प्रतिशत महिलाएँ आज भी अकुशल श्रमिक है, जिस कारण उन्हें उनके श्रम का उचित मूल्य नहीं प्राप्त हो पाता है। अकुशल होने के कारण उत्पादित माल पर भी उनका कोई नियंत्रण नहीं रह पाता है

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.67
Volume 5, Issue 3, January 2025

**निष्कर्ष –**

महिला व पुरूष दोनों ही पारिवारिक उत्तरदायित्वों के लिये सम्यक रूप से जिम्मेदार हैं। तथापि परम्परागत परिवेश में पले–बढ़े होने के कारण पारिवारिक उत्तरदायित्व महिलाएँ स्वयंमेव अपने ऊपर ले लेती है। परिवार की धुरी मुख्यतः महिला को इसलिए सम्भवतः माना जाता है। सामाजिक स्थिति के संदर्भ में भी यद्यपि महिला की समाज में एक पहचान होती है। घरेलू महिला की तुलना मे ं समाज मे ं उसका उच्चतर स्थान होता है, परन्तु इस पहचान के एवज में वह भागम–भाग मे ं उलझ कर रह गयी है। जिन परिवारों मे ं बड़े बुजुर्गों के रूप मे ं दादा–दादी अथवा नाना–नानी का संरक्षण बच्चों को नहीं मिल पाता वहाँ बच्चों के लिए उसकी चिन्ता उसके कामकाज को प्रभावित करती है। कार्यक्षेत्र मे ं अतिरिक्त समय की माँग उसके लिए तनाववर्धक हो जाती है। अतः अपने कार्यक्षेत्र के दायित्वों की सहज सम्पन्नता में इनका योगदान पुरूषों के समकक्ष नहीं हो पाता। भारतीय संस्कृति के संदर्भ मे ं यह स्थिति वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सत्य है। संक्रमण के इस दौर के गुज़रने के बाद भावी पीढ़ी की महिलाएँ सम्भवतः सशक्तता के अधिक उच्च प्रतिमानों को स्थापित कर सकेंगी और पुरूषों के समकक्ष स्वयं को स्थापित कर सकेंगी। यद्यपि महिला चाहे घरेलू हो या कामकाजी उसकी भूमिका महत्त्वपूर्ण है, परन्तु घरेलू महिला के कार्य को कोई मूल्य निर्धारित न होने के कारण कामकाजी महिला को अधिक महत्त्व दिया जाता है, परन्तु वर्तमान कामकाजी महिलाओं में सशक्तता के साथ पनप रही 'लिव इन रिलेशनशिप' की प्रवृत्ति, अधिक उम्र मे ं विवाह तथा विवाह के पश्चात् ् बच्चों की जिम्मेदारी से भय जैसे प्रश्न परिवार नामक संस्था के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लगाने वाले हैं। अतः कामकाजी महिलाओं को विकास के पथ पर अग्रसर रहते हुए उपरोक्त प्रश्नों पर अवश्य विचार करना होगा तथा पुरुषों को भी घरेलू उत्तरदायित्वों के निर्वहन में अवश्य सहभागिता निभानी होगी। तभी महिला सशक्तता को सार्थक बन सकेगी।

संदर्भ सूची

[1]. भादुरी, अंकिता और असीम कुमार मुखर्जी, वर्तमान युग में भारतीय कामकाजी महिलाओं की स्थिति, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट 2015;

[2]. स्ट्रोमक्विस्ट नेली पी. सशक्तिकरण के लिए सैद्धांतिक और व्यावहारिक आधार, महिला, शिक्षा और सशक्तिकरण में, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2005।

[3]. Gola Maya. Bhartiya pariwaro me Kamkaji mahila, Uttara 2016.

[4]. Page Ruth. Paths of Empowerment: Ten years of early childhood work in Israel. The Hague: Bernardvan Leer Foundation 1990.

[5]. Paycheck. In-4 key social forces to improve the status of working women in India, retrived from net on 27 March 2018.

[6]. Planningcommission.nic.in-XII five year plan, Report of the Working Group on Women"s Agency and Empowerment, Accessed on 28 March 2018.

[7]. Rao Behara Sriniwas. Women Empowerment and Planning Process, retrived from counterwriter.in on 28 March 2018.

[8]. Sodhganga.inflibnetac.in: The Status of Women in Indian Society, retrived from counterwriter.in on 27 March 2018.